सबर

शैख मुहम्मद इशाक मुलतानी.

नोट: आप से दरखास्त है की इसे
भाषा या ग्राम्मर का अदब ना समझे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

सबर और फितरत का कानून

ये कुदरत का कानून हे कि मुसीबतो के बाद आम तौर से नेमतो का दरवाजा खुलता हे, शुरूआत मे जो आज्माइश होती हे आदमी इस्को बरदाश्त करले फिर फुतूहात के दरवाजे खुल जाते हे और अगर इसी मे भाग निकला तो फिर मुसीबत ही मुसीबत हे, बाकी हुक्म यही हे कि मुसीबत मत मांगो, आफियत मांगो, और इसीसे दुवा करो लेकिन अगर मुसीबत आ-जाये तो सबर करो.

सबर करने का वकत

सबर अपने वकत पर होता हे एक मुद्दत गुजरने के

बाद तो हर एक को सबर आ ही जाता हे, वो ही सबर सवाब का सब्ब होता हे जो अपने इरादे और इख्तियार से मुसीबत को दबाने के लिये किया जाये. हदीस मे हे एक बुढि औरत का जवान बेटा मर गया नबी करीमﷺ उधर से गुजरे तो बुढि औरत का वावेला फरियाद और बच्चे की खुबीया बयान करके रो रही थी, नबी करीमﷺ ने फरमाया सबर करो, वो नबी करीमﷺ को पेहचाती नही थी, जवाब दिया कि हा तुम्हारा जवान बेटा मर गया होता तो पता चलता.

नबी करीमﷺ चल दिये तो किसी ने कहा के ये अल्लाह के रसुल थे, दोडी-दोडी आई और कहा अब मे सबर करूगी, नबी करीमﷺ ने फरमाया सदमा और रंज पहुचते ही आदमी सबर करे तो सवाब का सब्ब होता हे.

मुसीबत आये तो सबर करो

एक साहब ने हजरत थानवी(रह) से कहा कि मुझ पर मुसीबते और हादसे इतने आये हे कि अगर खुदकुशी जाइज होती तो मे यकीनन कर लेता.

हजरत थानवी(रह) ने फरमाया अगर मुसीबते और हादसे कोई बुरी चीझ होती तो अल्लाह नबीयो के लिये पसंद ना करते, मागना तो आफीयत ही

चाहिये, लेकिन अगर कोई मुसीबत आ-जाये तो अल्लाह के फेसले पर राजी रहकर सबर करना चाहिये, और अल्लाह के हुकम और उनके हकीम होने का यकीन रखे और उनपर ही नजर रखे.

सबर ना करने पर आज्माइश

१. जल्दबाजी करने से सबर की फजीलतओ से मेहरूम हो जाता हे, इसलिये इन्सान को चाहिये कि वो सबर करे और उस्के नतीजे की उम्मीद रखे अगरचे देर से ही क्यू ना हो.

२. गुस्सा सबर के खिलाफ हे उसी वजह से हजरत यूनुस(अलै) गुस्से की वजह से अपनी कौम को छोडकर चले गये अल्लाह ने उनको मछली के पेट मे डाल दिया अगर यूनुस(अलै) मछली के पेट मे तस्बीह ना करते तो कियामत तक मछली के पेट मे रहते.

३. ना उम्मीदी सबर के खिलाफ हे, हजरत याकूब (अलै) ने अपने बेटो को ना उम्मीदी से मना किया जैसा कि अल्लाह का फरमान हे, अल्लाह की रहमत से ना उम्मीद मत हो.

इमाम जेनुल आबिदीन(रह) का बेमिसाल सबर

कुरान मे अल्लाह ने परहेजगार मोमिनो की खास आदते और निशानीया बतलाई हे जिनमे से एक ये

हे कि वो गुस्से को पी लेते हे, अल्लामा आलूसी(रह) ने हजरत इमाम जेनुल आबिदीन(रह) का एक अजीब वाकिया नकल किया हे कि इमाम जेनुल आबिदीन(रह) को उन्की बांदी वुज़ू करा रही थी कि अचानक पानी का बर्तन उस्के हाथ से छूट कर इमाम जेनुल आबिदीन रहके ऊपर गिरा आपके तमाम कपडे भीग गये तो गुस्से आना फित्री स्वाभाविक काम था बांदी को खतरा हुवा तो उसने फौरन सुरह आले इमरान की ये आयत न.१३४ पढी तरजुमा- वो गुस्से को पी जाते हे, ये सुनते ही आपका सारा गुस्सा ठंडा हो गया बिलकुल खामोश हो गये,

इस्के बाद बांदी ने आयत का दूसरा हिस्सा जुमला जिसका तरजुमा- हे लोगो को माफ करते हे पढ दिया आपने फरमाया मेने तुझको दिल से माफ कर दिया,

फिर उसने तीसरा जुमला भी सुना दिया जिसका तरजुमा- ये हे अल्लाह एहसान करने वालो को पसन्द फरमाते हे,

इमाम जेनुल आबिदीन(रह) ने ये सुन कर फरमाया कि जा मेने तुझे आजाद कर दिया.

हवाला: एक हज़ार अनमोल मोती उर्दु से मज़मून का खुलासा लिप्यान्तरण किया गया हे.